

① भारतीय आचार्य द्वारा निर्दिष्ट काव्य लक्षण बताएँ।

जवा- संस्कृत काव्य शास्त्र में काव्य लक्षण पर पद्यिका विचार-विमर्श किया गया है। कई आचार्यों ने अपने-अपने मत को प्रमुखता देते हुए जो काव्य-लक्षण प्रस्तुत किये हैं वे सर्वमान्य नहीं कहे जा सकते। संस्कृत आचार्यों द्वारा निर्दिष्ट काव्य लक्षण निम्नलिखित हैं-

(1) मामह के अनुसार "शब्दार्थों सहितों काव्यम्" अर्थात् शब्द और अर्थ के सहित मध्य को काव्य कहते हैं। इस परिभाषा में सहित शब्द अस्पष्ट है।

(2) आचार्य दण्डी के अनुसार शरीरावधारित व्यवच्छिन्ना पदावलि अर्थात् इस अर्थ से युक्त सपदावलि को मुख्य अर्थात् काव्य का शरीर माना है।

(3) रीति सुमराय के प्रवर्तक आचार्य वामन के अनुसार "गुण-लक्ष्मणों शब्दार्थों काव्य शब्दों विद्यते" अर्थात् गुण और अलंकार से युक्त शब्दार्थ ही काव्य है।

(iv) आचार्य विश्वनाथ के अनुसार वाक्य रसात्मक काव्य अर्थात्, रस से पूर्ण वाक्य ही काव्य है। इस परिभाषा से स्पष्ट है कि आचार्य विश्वनाथ ने रस को ही काव्य का प्रमुख तत्व माना है।

(v) पंडित राज जगन्नाथ के अनुसार रमणीयार्थ प्रतिपादक शब्द काव्यमय अर्थात्, रमणीय अर्थ को प्रतिपादित करने वाला शब्द ही काव्य है। इस परिभाषा में रमणीय शब्द अस्पष्ट है। बाबू गुलाबराय ने रमणीय का अर्थ मन को रमने वाला बताया है। हिन्दी आचार्यों द्वारा निर्दिष्ट काव्य - लक्षण -

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञान द्वारा कहलाती है उसी प्रकार हृदय की मुक्तावस्था रस द्वारा कहलाती है। हृदय की इसी मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द विद्या कहली आई है, उसे कविता कहते हैं।



आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के अनुसार व किसी प्रभावोत्पादक और मनोरंजक लेख या बात का नाम कविता है।

बाबू गुलाबराय के अनुसार काव्य संसार के प्रति कवि की भाव-प्रधान मानसिक प्रतिक्रियाओं की श्रेय को प्रेय देने वाली अभिव्यक्ति है। इस परिभाषा में अनुभूति पक्ष या भाव पक्ष प्रधानता को ही काव्य का मूलोद्धार माना गया है।

पाश्चात्य समीक्षकों द्वारा निर्दिष्ट काव्य-लक्षण -

(i) मैथ्यू आर्नल्ड - काव्य मूल रूप में जीवन की आलोचना है।

(ii) कालरीज - सर्वोत्तम शब्दों का सर्वोत्तम क्रम-विधान ही काव्य है।

(iii) रूड्स - कविता कल्पना और संवेग के द्वारा जीवन की व्याख्या है।

स्पष्टतः कहा जा सकता है कि काव्य का सर्वमान्य लक्षण उद्भूत करना असंभव है।